International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थितिके सन्दर्भ में अध्ययन

अजय पाल सिंह[1] , प्रो० आर० एस० पथनी[2]

[1]शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र), कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

[2]पर्यवेक्षक, शिक्षा संकाय

एस०एस०जे० परिसर, अल्मोड़ा

सारांश:-

प्रस्तुत शोध अध्ययन स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की समायोजन को जानने हेतु किया गया है। इस शोध में जनपद उधम सिंह नगर के 5 राजकीय महाविद्यालयों में स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् 400 विद्यार्थियों को शामिल किया गया है। जिसमें 160 छात्र व 240 छात्राओं को सरल यादृच्छिक विधि से चयन किया गया है। इस शोध कार्य में प्रदत्तों के संकलन हेतु शोधार्थी द्वारा को अभय जोगलेकर तथा रुपा सल्होत्रा द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत उपकरण प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष के रुप में पाया कि- छात्र व छात्राओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति के मध्य कोई सार्थक अंतर नही है। कला वर्ग एंव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में के मध्य सार्थक अन्तर है। ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति के मध्य सार्थक अन्तर है।

प्रस्तावना:-

सामाजिक-आर्थिक स्थिति किसी व्यक्ति का सामाजिक स्तर , उसकी आय, पूँजी तथा समाज में उसकी स्थिति का निर्धारण करती है। सामाजिक-आर्थिक स्तर किसी व्यक्ति की वह स्थिति बताता है। जिस स्तर या समुदाय का वह सदस्य है लोगों द्वारा समाज को विभिन्न समूह वर्गों में बांट दिया गया है जिसका आधार व्यवसाय , आय तथा संस्कृति एवं परंपराओं से है। सामाजिक आर्थिक स्थिति में कई आयामों को शामिल किया जाता है। जैसे- आय का माध्यम, संस्कृति, धर्म, आस्था, सामाजिक व पारिवारिक संबंध तथा जीवन स्तर जिसमें व्यक्ति रहता है। परंतु सामाजिक आर्थिक स्थिति में व्यक्ति के परिवार की प्रकृति और सदस्य संख्या, शिक्षा का स्तर, प्रति परिवार मासिक आय, घर में भौतिक सुविधाएं आदि को जानने से है। जिसके आधार पर समाज को कई वर्गों में विभाजित किया जा सकता है जिसमें उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग, निम्न वर्ग होते हैं।

इस शोध कार्य में किसी समाज के व्यक्ति की सामाजिक-आर्थिक स्थिति के जानने के लिए परिवार एवं व्यक्तिगत संबंधी जानकारी जैसे- शिक्षा, मासिक आय, मकान की प्रकृति तथा उसमें भौतिक सुविधाएं किस प्रकार की हैं। सामाजिक संबंध कैसा है। सामाजिक-आर्थिक स्थिति अंग्रेजी के सोशियो इकोनामिक

स्टेटस शब्दों से मिलकर बना है जिसमे सोशियो का अर्थ है- सामाजिकता अर्थात वह समुदाय जिसमें व्यक्ति रहता हैं। इकोनामिक का अर्थ है- आर्थिक या वित्त जो व्यक्ति की आय या पूंजी को इंगित करता है। तीसरा शब्द है, स्टेटस इसका अर्थ है- स्थिति या स्तर।

समस्या कथन:-

"स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति के सन्दर्भ में अध्ययन"

संक्रियात्मक परिभाषायें :-प्रस्तुत शोध अध्ययन की समस्या कथन में प्रयुक्त हुये शब्दों का निम्न प्रकार से पारिभाषित किया गया है-

स्नातक स्तर :-

स्नातक स्तर से तात्पर्य उन छात्रो से है। जो 10+2 स्कूली शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात् किसी विश्वविद्यालय या महाविद्यालय के 3 वर्षीय किसी पाठ्यक्रम में उपाधि प्राप्त करने के लिए अध्ययनरत् है।

विद्यार्थियों :-

प्रस्तुत शोध रूपरेखा में विद्यार्थियों से तात्पर्य उन छात्रों से है, जो विश्वविद्यालय या महाविद्यालय में स्नातक स्तर की शिक्षा ग्रहण कर रहे है।

सामाजिक-आर्थिक स्थिति :-

किसी व्यक्ति का सामाजिक-आर्थिक स्तर उसकी आय , पूँजी तथा समाज में उसकी स्थिति का निर्धारण करता है। इस अध्ययन में सामाजिक-आर्थिक स्थिति से तात्पर्य विद्याथियों के सामाजिक स्तर में परिवारिक स्थिति, घर की भौतिक स्थिति और आर्थिक स्तर में पारिवारिक आय और पूंजी को जानने से है, जो उनको उच्च, मध्यम और निम्न स्तर में बांटते है।

अध्ययन के उदेश्य :- प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित उदेश्य है।

1. स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।

सामाजिक-आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित साहित्य:-

1. श्रीवास्तव, मंयक कुमार (2010) ने सामाजिक-आर्थिक स्थिति के सन्दर्भ में शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन किया। इस शोध में कुछ इस प्रकार निष्कर्ष प्राप्त हुये कि शहरी विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यालयों में छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर उनकी उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च व निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति का छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया जबकि शहरी व ग्रामीण पृष्टभूमि की निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर की छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव देखने को मिला।

2. जरीना और वत्सला (2011) ने समायोजन की समस्या , समय , प्रबन्ध और माता-पिता की सामाजिक आर्थिक स्थिति का छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना लक्ष्य रखा।

नमूना के तौर पर 8वीं के 80 विद्यार्थियों को शामिल किया गया। निष्कर्ष में संकेत प्राप्त हुये कि कम प्राप्तकर्ताओं को उच्च प्राप्तकर्ताओं की तुलना में अधिक समायोजन अधिक समायोजन समस्याएं है और साथ ही उच्च और निम्न प्राप्तकर्ताओं की समय प्रबन्धन क्षमता में कोई अन्तर नहीं था। तथा माता-पिता की आर्थिक स्थिति का उच्च और निम्न उपलब्धि हासिल करने वालों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

3. जी0 एम0 (2016) ने उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियां की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का उनके शैक्षिक निष्पत्ति पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन किया इन्होनें न्यादर्श के रूप में 382 विद्यार्थियों का चयन स्तरित दैव निदर्शन विधि से किया। आँकड़ों के संग्रह करने हेतु एक स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान , प्रमाप विचलन तथा पियर्सन सहसम्बन्ध का प्रयोग किया गया। निष्कर्षा में पाया गया कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा शैक्षिक निष्पत्ति में गहरा सम्बन्ध पाया गया।

परिकल्पनाऐं :-

1. स्नातक स्तर के छात्र व छात्राओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में कोई सार्थक अन्तर नही है।

2. स्नातक स्तर के कला वर्ग एंव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में कोई सार्थक अन्तर नही है।

3. स्नातक स्तर के ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में कोई सार्थक अन्तर नही है।

अध्ययन विधि :-

प्रस्तुत शोध कार्य 'सर्वेक्षण विधि' को आधार मानकर किया गया है।

अध्ययन की जनसंख्या :-

इस शोध अध्ययन में जनपद उधम सिहं नगर में स्थित कुमाऊँ विश्वविद्यालय से सम्बद्ध सभी राजकीय महाविद्यालयों के बी ०ए०, बी०एस०सी० द्वितीय वर्ष में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को अध्ययन की जनसंख्या में सम्मिलित किया गया हैं।

न्यादर्श एवं न्यादर्श प्रविधि :-

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श को जनपद उधम सिंह नगर के राजकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत् कुल 400 विद्यार्थियों को लिया गया है। जिसमें 160 छात्र व 240 छात्राओं को सरल यादृच्छिक विधि से चयन किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण:-

इस शोध कार्य में प्रदत्तों के संकलन हेतु शोधार्थी द्वारा को अभय जोगलेकर तथा रुपा सल्होत्रा द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत उपकरण प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ:-

अध्ययन शोधार्थी ने अपने शोध अध्ययन के प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, क्रांतिक अनुपात का प्रयोग किया गया है।

तालिका संख्या-1.0 छात्र व छात्राओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति की सांख्यिकीय गणना का विवरण

अध्ययन चर	लिंग	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर
सामाजिक-आर्थिक स्थिति	छात्र	160	82.70	14.63	0.97	0.05#
	छात्रायें	240	81.20	15.85		

#0.05 पर असार्थक

उपरोक्त तालिका संख्या 1.0 से स्पष्ट होता है। कि स्नातक स्तर के छात्र व छात्राओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति के संदर्भ में मध्यमान का मान क्रमशः 82.70 व 81.20 पाया गया है। तथा मानक विचलन कि क्रमशः 14.63 व 15.85 पाया गया। दोनों समूह के मध्य सार्थकता की जांच करने हेतु क्रांतिक अनुपात निकाला गया। जिसका मान 0.97 प्राप्त हुआ। जोकि सार्थकता स्तर 0.05 के मान 1.97 से कम है। इसलिए शून्य परिकल्पना "स्नातक स्तर के छात्र व छात्राओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में कोई सार्थक अन्तर नही है। " स्वीकृत की जाती है। अतः उपरोक्त सांख्यिकीय अवलोकन के आधार पर कहा जा सकता है। कि छात्र व छात्राओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति के मध्य कोई सार्थक अंतर नही है। उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित गणनाओं को दण्डारेख संख्या 1.0 में दर्शाया गया है।

आरेख- 1.0 छात्र व छात्राओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का मध्यमान एवं मानक विचलन का दण्डारेख

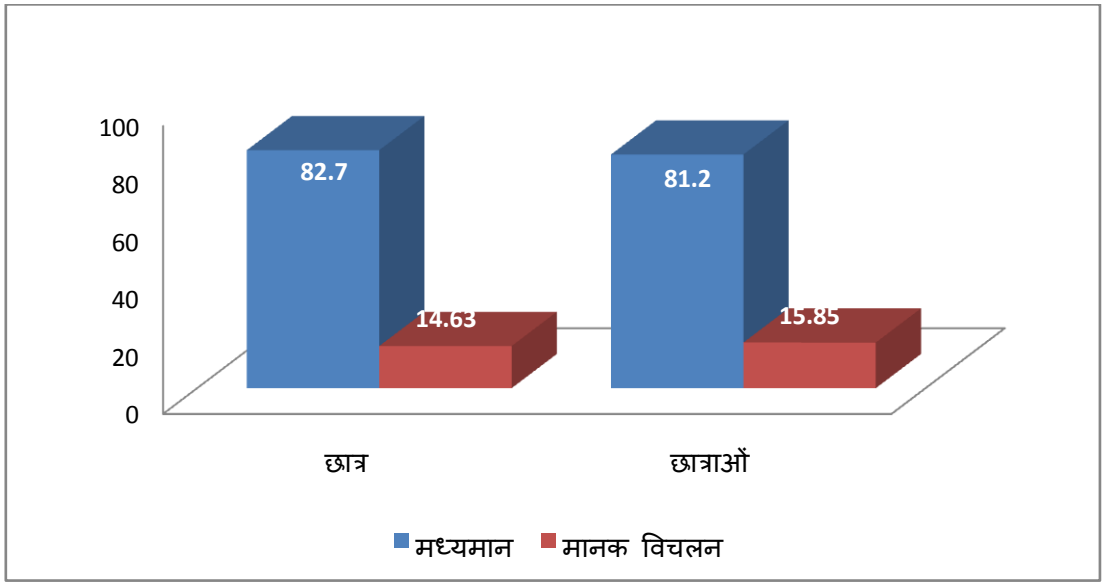

तालिका संख्या-2.0 कला वर्ग एंव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति की सांख्यिकीय गणना का विवरण

अध्ययन चर	वर्ग	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर
सामाजिक-आर्थिक स्थिति	कला	236	78.00	13.92	3.54	0.05#
	विज्ञान	164	83.04	13.98		

#0.05 पर सार्थक

उपरोक्त तालिका संख्या 2.0 से स्पष्ट होता है कि स्नातक स्तर के कला वर्ग एंव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति के संदर्भ में मध्यमान का मान क्रमशः 78.00 व 83.04 पाया गया है। तथा मानक विचलन कि क्रमशः 13.92 व 13.98 पाया गया। दोनों समूह के मध्य सार्थकता की जांच करने हेतु क्रांतिक अनुपात निकाला गया। जिसका मान 3.54 प्राप्त हुआ। जोकि सार्थकता स्तर 0.05 के मान 1.97 से अधिक है। इसलिए शून्य परिकल्पना "स्नातक स्तर के कला वर्ग एंव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में कोई सार्थक अन्तर नही है। " अस्वीकृत की जाती है। अतः उपरोक्त सांख्यिकीय अवलोकन के आधार पर कहा जा सकता है कि कला वर्ग एंव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में के मध्य सार्थक अन्तर है। उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित गणनाओं को दण्डारेख संख्या 2.0 में दर्शाया गया है।

आरेख- 2.0 कला वर्ग एंव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का मध्यमान एवं मानक विचलन का दण्डारेख

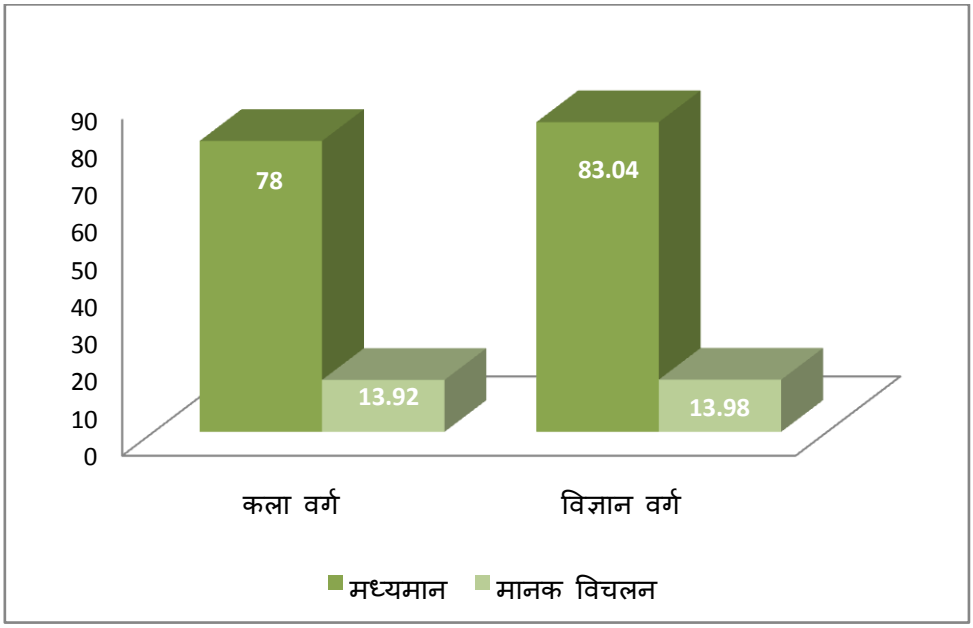

तालिका संख्या-3.0 ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति की सांख्यिकीय गणना का विवरण

अध्ययन चर	परिवेश	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर
सामाजिक-आर्थिक स्थिति	ग्रामीण	190	79.34	14.16	3.10	0.05#
	शहरी	210	84.03	16.10		

#0.05 पर सार्थक

उपरोक्त तालिका संख्या 3.0 से स्पष्ट होता है कि स्नातक स्तर के ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति के संदर्भ में मध्यमान का मान क्रमशः 79.34 व 84.03 पाया गया है। तथा मानक विचलन कि क्रमशः 14.16 व 16.10 पाया गया। दोनों समूह के मध्य सार्थकता की जांच करने हेतु क्रांतिक अनुपात निकाला गया। जिसका मान 3.10 प्राप्त हुआ। जो कि सार्थकता स्तर 0.05 के मान 1.97 से अधिक है। इसलिए शून्य परिकल्पना "स्नातक स्तर के ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में कोई सार्थक अन्तर नही है। " अस्वीकृत की जाती है। अतः उपरोक्त सांख्यिकीय अवलोकन के आधार पर कहा जा सकता है कि ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति के मध्य सार्थक अन्तर है। उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित गणनाओं को दण्डारेख संख्या 3.0 में दर्शाया गया है।

आरेख- 3.0 ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का मध्यमान एवं मानक विचलन का दण्डारेख

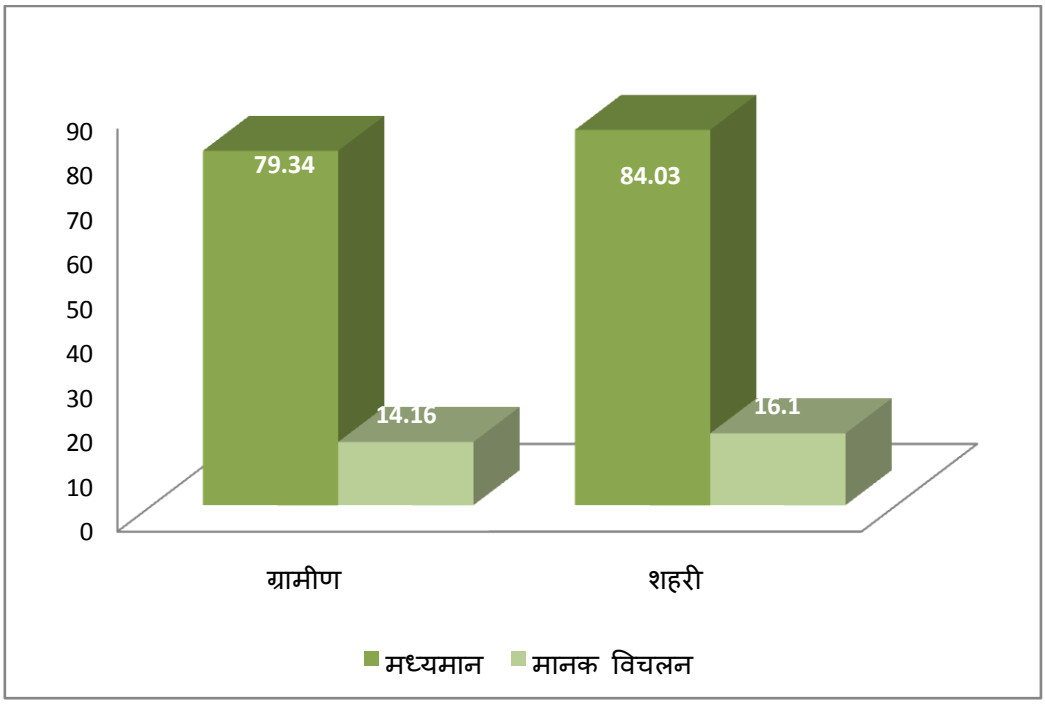

अध्ययन के निष्कर्ष:-

1. शून्य परिकल्पना **"स्नातक स्तर के छात्र व छात्राओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में कोई सार्थक अन्तर नही है।"** स्वीकृत की गई। अतः छात्र व छात्राओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति के मध्य कोई सार्थक अंतर नही है। जिसके संभवतया कारण में कहा जा सकता है कि छात्र-छात्रायें दोनों ही एक ही समाज तथा एक ही परिवार के हिस्सा होते हैं। वर्तमान समय में अभिभावकों द्वारा बिना भेदभाव के पारिवारिक शिक्षा तथा आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति की जाती है। तथा दोनों को समान रूप से शिक्षा, सुरक्षा, एवं स्वतंत्रता आदि के समान संवैधानिक आधार पर अवसर प्राप्त हैं।

2. शून्य परिकल्पना **"स्नातक स्तर के कला वर्ग एंव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में कोई सार्थक अन्तर नही है"** अस्वीकृत की गई। अतः कला वर्ग एंव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में के मध्य सार्थक अन्तर है। जिसके संभवतया कारण इस प्रकार हो सकते है। कि निम्न आर्थिक पृष्ठभूमि वाले परिवार के बच्चों में विज्ञान वर्ग के विषयों को पढ़ने की रूचि होते हुए भी सामान्यतया कला विषयों को पढ़ने पर महत्व देते हैं। क्योंकि विज्ञान के विषयों के पढ़ने के लिए उनके परिवार को अधिक आर्थिक व्यय करना पड़ता है। और कम सामाजिक-आर्थिक स्थिति होने पर भी अभिभावक अपने बच्चों को विज्ञान विषय को पढ़ने को पर बल देते हैं। क्योंकि वे अपने सामाजिक स्तर को ऊंचा दिखा सकें। इसलिए कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति के मध्य अंतर दृष्टिगत होता है।

3. शून्य परिकल्पना **"स्नातक स्तर के ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में कोई सार्थक अन्तर नही है।"** अस्वीकृत की गई। अतः ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति के मध्य सार्थक अन्तर है। जिसके संभवतया कारण इस प्रकार हो सकते है। कि ग्रामीण परिवेश में आय के साधन शहरी परिवेश के लोगों की तुलना में सीमित होते हैं। ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों को प्राप्त संसाधनों और निवास की प्रकृति एवं पास पड़ोस के वातावरण में अंतर होता है। इसलिए ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों के मध्य अंतर स्पष्ट दिखाई देता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची:-

1. Pawar, B. (2015, July). Achievement Motivation among adolescents in relation to their socio-economic status. *Indian psychology Review* , 97-106.
2. Perveen, S. (2007, 2 2). *A study the relationship between socio-economic status and attitude of high school student towards Eduction in Aurangabad district.*

Retrieved 2018, from http://www.shodhganda.infibnet.ac.in: http://hdl.handle.net/10603/84735

3. Warda, A. (2014). The relationships between background educaton socio demographic and life style factors and academic performance. *Galf MedicaL journal , 3*, 114-122.
4. सिंह, म. (2008). *सामाजिक आर्थिक स्थिति के परिप्रेक्ष्य में देवीपाटन मंडल के ग्रामीणचल के छात्रों आकांक्षा स्तर एवं मूल्यों का अध्ययन* . Retrieved Nov 2020, from shodhganga.infibnet.ac.in: http://hdl.handle.net/10603/230752
5. गुप्ता, ए. (2015). *अनुसंधान परिचय संप्रत्यय विधियां और प्रविधियां* . शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद उ0प्र0.
6. सलहोत्रा, अ. आ. (2019). सोशियो इकोनामिक स्टेटस स्केल (SESS-JASR). नेशनल साइकोलॉजिकल कॉरपोरेशन आगरा उत्तर प्रदेश.